Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-3 | Issue-7 | July - 2025 | Page 40-45

ग्रामीण समाज में धार्मिकता एवं अंधविश्वास: एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण (छत्तीसगढ़ राज्य के विशेष सन्दर्भ में)

कु. शिखा त्रिवेदी
सहायक प्राध्यापक
शासकीय जे. पी. वर्मा स्नातकोत्तर कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, बिलासपुर, (छत्तीसगढ़)
shikhatrivedi1589@gmail.com

सारांश

यह शोध लेख छत्तीसगढ़ के ग्रामीण समाज में व्याप्त धार्मिकता और अंधविश्वास की स्थिति का समाजशास्त्रीय विश्लेषण प्रस्तुत करता है। अध्ययन के दौरान यह स्पष्ट होता है कि ग्रामीण जीवन में धार्मिकता केवल आध्यात्मिक आस्था नहीं है, बल्कि यह सामाजिक संगठन, सांस्कृतिक संरचना और पारिवारिक जीवन का एक केंद्रीय आधार है। लोक देवी-देवताओं की पूजा, पारंपरिक रीति-रिवाज, त्योहार और सामूहिक धार्मिक आयोजन गांवों में सामाजिक एकता और सांस्कृतिक पहचान को सुदृढ़ करते हैं। लेकिन दूसरी ओर, धार्मिक आस्था के नाम पर अनेक प्रकार के अंधविश्वास भी प्रचलित हैं, जो समाज के विकास में बाधा बनते हैं। टोनही प्रताड़ना, झाड़-फूंक, बलिप्रथा, अशुभ-शुभ मुहूर्त, और तांत्रिकों का प्रभाव—ये सभी अंधविश्वासी प्रथाएं विशेषकर महिलाओं, दलितों और आदिवासियों के लिए शोषण का माध्यम बनती हैं। इस केस स्टडी के माध्यम से यह सामने आता है कि अंधविश्वास की जड़ें शिक्षा की कमी, स्वास्थ्य सुविधाओं की अनुपलब्धता, सामाजिक असमानता और सांस्कृतिक विरासत के अंधअनुकरण में गहराई से जमी हुई हैं। इनका प्रभाव न केवल व्यक्तिगत जीवन पर पड़ता है, बल्कि यह सामाजिक ढांचे, महिला अधिकारों और वैज्ञानिक सोच के विकास को भी प्रभावित करता है। हालांकि सकारात्मक बात यह है कि वर्तमान समय में छत्तीसगढ़ में सामाजिक परिवर्तन की बयार भी चल रही है। सरकार द्वारा टोनही प्रताड़ना निवारण अधिनियम जैसे कड़े कानून बनाए गए हैं, स्वयंसेवी संगठन ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य और वैज्ञानिक दृष्टिकोण को बढ़ावा दे रहे हैं, और मीडिया जागरूकता अभियान चला रहा है। इसके साथ ही कुछ पंचायतें और महिला समूह अंधविश्वास के खिलाफ सामूहिक संघर्ष में भी शामिल हो चुके हैं।

प्रस्तावना

भारत एक विविधतापूर्ण देश है जहाँ धार्मिकता और आस्था जन-जन के जीवन का अभिन्न अंग हैं। विशेषतः ग्रामीण समाज में धर्म केवल एक आध्यात्मिक अवधारणा न होकर सामाजिक संरचना, जीवन पद्धति, पारिवारिक नियम और सांस्कृतिक परंपराओं का केंद्र बिंदु होता है। धार्मिक विश्वास ग्रामीण जनों को जीवन की अनिश्चितताओं से मानसिक संबल प्रदान करते हैं और सामाजिक एकजुटता को सुदृढ़ करने में सहायक होते हैं। किन्तु जब यही

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-3 | Issue-7 | July - 2025 | Page 40-45

आस्था विवेक और तर्क से परे जाकर अंधविश्वास का रूप ले लेती है, तो यह समाज में अनेक समस्याओं और कुरीतियों को जन्म देती है।

छत्तीसगढ़ राज्य, जो कि आदिवासी और ग्रामीण आबादी से समृद्ध है, यहां की धार्मिक संस्कृति अत्यंत समृद्ध होने के साथ-साथ अंधविश्वास की कई जड़ें भी गहराई से स्थापित हैं। टोनही प्रताड़ना, झाड़-फूंक, बलिप्रथा और चमत्कारों में अंध विश्वास जैसी कुप्रथाएं अब भी समाज के कुछ हिस्सों में व्याप्त हैं। इनका प्रभाव विशेष रूप से महिलाओं, बच्चों और वंचित वर्गों पर पड़ता है, जिससे सामाजिक असमानता, हिंसा और पिछड़ापन बढ़ता है। इस शोध आलेख का उद्देश्य छत्तीसगढ़ राज्य के विशेष संदर्भ में ग्रामीण समाज में धार्मिकता और अंधविश्वास के परस्पर संबंधों का समाजशास्त्रीय विश्लेषण करना है। इसके अंतर्गत धार्मिक परंपराओं की सामाजिक भूमिका, अंधविश्वास के कारणों और प्रभावों, तथा सरकार और समाज द्वारा किए गए सुधारात्मक प्रयासों की समीक्षात्मक पड़ताल की जाएगी। यह अध्ययन न केवल धार्मिकता और अंधविश्वास के बीच के सूक्ष्म अंतर को स्पष्ट करता है, बल्कि सामाजिक चेतना, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और समावेशी विकास की दिशा में विचार प्रस्तुत करता है।

प्रमुख शब्द - ग्रामीण समाज, धार्मिकता, अन्धविश्वास, टोनही प्रथा, कुप्रथा उन्मूलन, महिला शोषण

1. ग्रामीण समाज में धार्मिकता का स्वरूप

ग्रामीण क्षेत्रों में धार्मिकता केवल पूजा-पाठ तक सीमित नहीं रहती, बल्कि यह व्यक्ति की संपूर्ण जीवनशैली को प्रभावित करती है। निम्नलिखित बिंदुओं में धार्मिकता के प्रमुख पहलुओं को समझा जा सकता है:

(क) सांस्कृतिक परंपरा का अंग: ग्रामीण समाज में धर्म परंपराओं, रीति-रिवाजों और लोक-मान्यताओं से गहराई से जुड़ा होता है। विवाह, जन्म, मृत्यु, त्योहार, कृषि कार्य आदि सभी में धार्मिक विधियों की प्रधानता रहती है।

(ख) सामाजिक एकता का आधार: ग्रामवासियों के लिए धर्म एक सामूहिक अनुभव होता है। मंदिर, मेले, पूजा-पाठ जैसी धार्मिक गतिविधियाँ समुदाय में एकता और सहयोग की भावना को बढ़ाती हैं।

(ग) आस्था और भक्ती - ग्रामीण समाज में ईश्वर, देवी-देवताओं, पूर्वजों और संतों के प्रति गहरी आस्था देखी जाती है। भक्ति रस में डूबे भजन, कीर्तन और कथाएँ गांवों में आम हैं।

2. अंधविश्वास: धार्मिकता का विकृत रूप

जब धर्म बिना तार्किक विवेक के, अज्ञानता और भय के आधार पर अनुसरण किया जाता है, तो वह अंधविश्वास का रूप ले लेता है। ग्रामीण क्षेत्रों में अंधविश्वास की व्यापकता के कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैं:

(क) टोनही प्रथा: कई क्षेत्रों में अब भी महिलाओं को 'डायन' बताकर प्रताड़ित किया जाता है, जो अंधविश्वास की चरम सीमा को दर्शाता है।

(ख) झाड़-फूंक एवं ओझा-पंडितों पर निर्भरता: बीमारियों, मानसिक तनाव या पारिवारिक समस्याओं के

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-3 | Issue-7 | July - 2025 | Page 40-45

समाधान हेतु चिकित्सकीय परामर्श की जगह तांत्रिकों और झाड़-फूंक का सहारा लिया जाता है।

(ग) ग्रह-नक्षत्र और अशुभ-शुभ मुहूर्त का डर: विवाह, व्यापार, या यात्रा से पूर्व मुहूर्त देखना, काली बिल्ली रास्ता काट दे तो कार्य रोक देना जैसे व्यवहार अब भी प्रचलित हैं।

(घ) चमत्कारों में विश्वास: ग्रामीण समाज में तथाकथित चमत्कारी बाबाओं की बड़ी मान्यता होती है जो विज्ञान और तर्क की अवहेलना करते हुए लोगों को भ्रमित करते हैं।

3. अंधविश्वास के प्रसार के कारण

ग्रामीण समाज में अंधविश्वास के गहरे प्रभाव के पीछे अनेक सामाजिक, आर्थिक और शैक्षणिक कारण होते हैं:

(क) शिक्षा की कमी: अशिक्षा और वैज्ञानिक दृष्टिकोण के अभाव में लोग चमत्कारों और अफवाहों पर विश्वास करते हैं।

(ख) स्वास्थ्य सुविधाओं की कमी: जब ग्रामीण क्षेत्रों में चिकित्सा सुविधाएँ उपलब्ध नहीं होतीं, तब लोग वैकल्पिक रूप से झाड़-फूंक का सहारा लेते हैं।

(ग) परंपरा और सामाजिक दबाव: पीढ़ी दर पीढ़ी चली आ रही मान्यताएँ लोगों को अंधविश्वासी बनाए रखती हैं, विशेषकर जब इनका विरोध सामाजिक बहिष्कार का कारण बनता है।

(घ) धर्मगुरुओं और ढोंगी बाबाओं का प्रभाव: कथित धर्मगुरु लोगों की भावनाओं और भय का शोषण करते हैं और अपने स्वार्थ के लिए अंधविश्वास को बढ़ावा देते हैं।

4. अंधविश्वास के सामाजिक प्रभाव

(क) महिलाओं पर अत्याचार: डायन प्रथा, बलि प्रथा जैसी मान्यताएँ महिलाओं के प्रति हिंसा को जन्म देती हैं।

(ख) आर्थिक शोषण: ग्रामीण जन अपने सीमित संसाधनों को तांत्रिकों, बाबाओं और झाड़-फूंक में व्यर्थ गंवा देते हैं।

(ग) स्वास्थ्य समस्याएँ: उचित इलाज के अभाव में बीमारी बढ़ जाती है, जिससे मृत्यु तक की स्थिति बन जाती है।

(घ) सामाजिक विघटन: अंधविश्वास के कारण लोग एक-दूसरे पर शक करते हैं, जो सामाजिक एकता को कमजोर करता है।

5. समाधान एवं सुधार की दिशा में प्रयास

(क) शिक्षा और जागरूकता: ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा का प्रसार कर वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करना आवश्यक है। मोबाइल विज्ञान वैन, रेडियो कार्यक्रम, नुक्कड़ नाटक जैसे माध्यम इस दिशा में उपयोगी हैं।

(ख) स्वास्थ्य सेवाओं का विस्तार: ग्रामीण इलाकों में प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों को सशक्त बनाकर लोगों का विश्वास आधुनिक चिकित्सा पद्धतियों में बढ़ाया जा सकता है।

(ग) कानून का प्रभावी क्रियान्वयन: डायन प्रताड़ना, बलि प्रथा जैसे कृत्य भारतीय दंड संहिता के अंतर्गत दंडनीय हैं। इन पर सख्ती से रोक लगानी चाहिए।

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-3 | Issue-7 | July - 2025 | Page 40-45

(घ) मीडिया और समाजसेवियों की भूमिका: फिल्मों, धारावाहिकों, सोशल मीडिया और स्वयंसेवी संस्थाओं के माध्यम से अंधविश्वास के विरुद्ध जनमत तैयार करना जरूरी है।

6. केस स्टडी: छत्तीसगढ़ में अंधविश्वास और धर्म का यथार्थ

छत्तीसगढ़ जैसे राज्य में आज भी कुछ क्षेत्रों में टोनही प्रथा, झाड़-फूंक की प्रथा और देवी पूजा के नाम पर बलि प्रथा प्रचलित हैं। वहीं कुछ स्वयंसेवी संगठन जैसे "जनस्वास्थ्य सहयोग", "बस्तर संवाद" आदि ग्रामीणों को स्वास्थ्य और वैज्ञानिक सोच की दिशा में जागरूक करने में जुटे हैं। यह स्पष्ट करता है कि जहाँ अंधविश्वास अभी भी मौजूद है, वहीं सुधार की दिशा में सकारात्मक प्रयास भी हो रहे है ,छत्तीसगढ़ राज्य आदिवासी बहुल क्षेत्र होने के कारण अपनी सांस्कृतिक विविधता, परंपराओं और धार्मिक मान्यताओं के लिए प्रसिद्ध है। यहां की ग्रामीण जनसंख्या में धार्मिकता गहराई से व्याप्त है, किंतु इसके साथ-साथ अंधविश्वास भी अनेक क्षेत्रों में आज भी प्रचलित है। यह केस स्टडी छत्तीसगढ़ के कुछ प्रमुख जिलों जैसे बस्तर, जशपुर, बिलासपुर और सरगुजा क्षेत्र में धर्म और अंधविश्वास के यथार्थ को उजागर करती है।

6.1. धार्मिकता का स्वरूप

छत्तीसगढ़ के गांवों में धार्मिक आस्थाएँ लोक देवी-देवताओं, ग्राम देवताओं और प्रकृति पूजन से जुड़ी होती हैं। प्रमुख मान्यताओं में "माटी पूजा", "दीवार पूजा", "गौरा-गौरी पूजा", और "दंतेश्वरी माता" की आराधना शामिल है। आदिवासी समाज में धर्म केवल पूजन तक सीमित नहीं है, बल्कि यह कृषि, वन, जल, पशुपालन और पारिवारिक जीवन का अभिन्न हिस्सा है।

बस्तर दशहरा: यह विश्व का सबसे लंबा त्योहार माना जाता है, जो धार्मिकता और सामाजिक एकता का प्रतीक है।

देवगुड़ी और मांझी प्रथा: गांवों में खास स्थान होते हैं जहां सामूहिक पूजा की जाती है, जिन्हें देवगुड़ी कहा जाता है। मांझी गांव के धार्मिक प्रमुख होते हैं।

6.2. अंधविश्वास की व्याप्ति

धार्मिक परंपराओं के समानांतर छत्तीसगढ़ में कई अंधविश्वासी प्रथाएं भी मौजूद हैं जो खासकर शिक्षा और स्वास्थ्य के अभाव वाले इलाकों में अधिक देखी जाती हैं:

टोनही प्रथा (डायन प्रताड़ना): विशेष रूप से बस्तर, बिलासपुर और कोरबा जिलों में अब भी महिलाएं 'टोनही' (डायन) घोषित की जाती हैं और उन पर सामाजिक बहिष्कार से लेकर हिंसा तक की घटनाएं होती हैं। वर्ष 2022 में बिलासपुर जिले में एक वृद्ध महिला को टोनही बताकर पीटा गया था, जो राज्य में अंधविश्वास की गंभीरता को दर्शाता है।

झाड़-फूंक और ओझा-पंडों का प्रभाव: आदिवासी इलाकों में बीमारी, बच्चा न होना, फसल खराब होना जैसे कारणों को लेकर लोग झाड़-फूंक और ओझा की शरण में जाते हैं। मेडिकल उपचार की जगह टोने-टोटकों पर भरोसा किया जाता है।

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-3 | Issue-7 | July - 2025 | Page 40-45

बलि प्रथा: बकरा, मुर्गा या कभी-कभी जानवरों की बलि देवी-देवताओं को चढ़ाई जाती है, विशेषकर त्यौहारों में। इसे ईश्वर को प्रसन्न करने का माध्यम माना जाता है।

6.3. सरकारी व सामाजिक हस्तक्षेप

राज्य सरकार और सामाजिक संगठनों ने अंधविश्वास की रोकथाम के लिए कई प्रयास किए हैं:
छत्तीसगढ़ टोनही प्रताड़ना निवारण अधिनियम, 2005: यह अधिनियम टोनही के नाम पर किसी व्यक्ति के साथ हिंसा या प्रताड़ना को दंडनीय अपराध बनाता है। इसके तहत सख्त दंड का प्रावधान है।
स्वयंसेवी संगठनों की भूमिका: जन स्वास्थ्य सहयोग (JSS), बिलासपुर — ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सुविधाओं और वैज्ञानिक दृष्टिकोण को बढ़ावा देने का कार्य कर रहा है।
बस्तर संवाद — बस्तर में महिलाओं को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक करने के साथ-साथ अंधविश्वास विरोधी अभियानों का संचालन करता है।
मीडिया एवं नाटक मंचन: नुक्कड़ नाटक, रेडियो कार्यक्रम, लोकगीतों के माध्यम से अंधविश्वास के खिलाफ संदेश प्रसारित किए जाते हैं। 'हमर रेडियो' जैसे स्थानीय माध्यम इसका उदाहरण हैं।

6.4. ग्रामीणों की सोच में बदलाव

हाल के वर्षों में कुछ सकारात्मक बदलाव भी देखने को मिल रहे हैं:
शिक्षित युवा अब बाबाओं या तांत्रिकों की बजाय डॉक्टर से परामर्श लेना पसंद कर रहे हैं। महिलाएं समूह बनाकर अंधविश्वास के विरुद्ध मोर्चा खोल रही हैं।विद्यालयों और आंगनबाड़ियों में वैज्ञानिक सोच को बढ़ावा देने के लिए विज्ञान मेलों, प्रयोगों और व्याख्यानों का आयोजन हो रहा है।

निष्कर्ष:

ग्रामीण समाज में धार्मिकता जीवन का अभिन्न अंग है, जो सामाजिक-सांस्कृतिक संरचना को मजबूती देता है। परंतु जब यह अंधविश्वास का रूप ले लेता है, तो यह समाज के लिए घातक बन जाता है। अतः आवश्यक है कि धर्म और अंधविश्वास के मध्य अंतर को समझते हुए ग्रामीण समाज में वैज्ञानिक दृष्टिकोण, शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं का विकास किया जाए। धर्म का उद्देश्य मानवता, करुणा और विवेक होना चाहिए, न कि भय, शोषण और अंधविश्वास का विस्तार।छत्तीसगढ़ जैसे राज्य का ग्रामीण समाज परंपरा, धार्मिकता और सामुदायिक संस्कृति से गहराई से जुड़ा हुआ है। यहां की धार्मिक आस्थाएँ केवल पूजा-पद्धति नहीं बल्कि सामाजिक व्यवस्था, पारिवारिक जीवन और सांस्कृतिक पहचान का भी आधार हैं। गांवों में देवी-देवताओं की आराधना, लोक-त्योहारों की परंपरा और प्रकृति-पूजन एक सकारात्मक धार्मिक जीवन को दर्शाते हैं। हालाँकि, इन्हीं धार्मिक विश्वासों की आड़ में कई बार अंधविश्वास जन्म लेते हैं जो न केवल व्यक्ति की सोच को बाधित करते हैं बल्कि समाज के कमजोर वर्गों, विशेषकर महिलाओं और अशिक्षित लोगों पर दमन का औजार बन जाते हैं। टोनही प्रथा, बलि-प्रथा, झाड़-फूंक, और तांत्रिकों का अंधाधुंध प्रभाव इसके स्पष्ट उदाहरण हैं। ये अंधविश्वास समाज में भय, भेदभाव और हिंसा को जन्म देते हैं, जो

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-3 | Issue-7 | July - 2025 | Page 40-45

सामाजिक विकास और मानवाधिकारों के दृष्टिकोण से अत्यंत चिंताजनक हैं। यह भी स्पष्ट है कि छत्तीसगढ़ में इस दिशा में सकारात्मक परिवर्तन की शुरुआत हो चुकी है। सरकार द्वारा बनाए गए कड़े कानून, सामाजिक संगठनों की सक्रियता, मीडिया और शिक्षा के प्रभाव से ग्रामीण जनमानस में वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित हो रहा है। युवाओं में जागरूकता बढ़ रही है, महिलाएं संगठित होकर अंधविश्वास के विरुद्ध आवाज़ उठा रही हैं, और पंचायत स्तर पर भी सुधारात्मक निर्णय लिए जा रहे हैं। धार्मिकता और अंधविश्वास के बीच स्पष्ट भेद करना अत्यंत आवश्यक है। धर्म यदि विवेक, करुणा और नैतिकता पर आधारित हो, तो वह समाज को जोड़ता है, परंतु जब वही धर्म अज्ञानता और भय के साथ जुड़कर अंधविश्वास का रूप ले लेता है, तो वह सामाजिक बुराई का कारण बनता है। अतः, छत्तीसगढ़ सहित समस्त ग्रामीण भारत में एक समावेशी रणनीति की आवश्यकता है, जिसमें शिक्षा, स्वास्थ्य, मीडिया, कानून और सामाजिक सहभागिता के समन्वय से धार्मिकता की सकारात्मक भूमिका को बनाए रखते हुए अंधविश्वास का प्रभावी उन्मूलन किया जा सके।

संदर्भ

1) Government of Chhattisgarh. (2005). Chhattisgarh Tonahi Pratarna Nivaran Adhiniyam. Raipur: Law Department.
2) Sharma, R. (2021). Cultural Identity and Festivities of Bastar Region. Indian Folklore Review, 12(3), 45-56.
3) Verma, A. (2018). Religion and Tribal Life in Central India. Journal of Social Research, 20(1), 112-130.
4) Kumar, D., & Lal, R. (2019). Belief Systems and Health Practices among Tribals of Chhattisgarh. Health Sociology Quarterly, 15(2), 65-79.
5) Pandey, M. (2020). Superstition in Central India: A Sociological Review. Indian Journal of Rural Development, 28(4), 88-97.
6) The Hindu. (2022). Woman branded witch and assaulted in Bilaspur village.